REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2019

मुघलकालीन शिल्पो

डा.मयंक टी. बारोट
आसी.प्रोफसर, श्री बी.डी.अेस. आर्टस, सायन्स एन्ड कोमर्स कोलेज, पाटण.

❊ हिन्दु-जैन-पाषाण शिल्पो :

शामलाजी (जि.साबरकांठा) का गदाधर मंदिर शिल्पखचित है। मंदिर के गर्भगृह में विष्णु के त्रिविक्रम स्वरुप की चतुर्भुज प्रतिमा स्थपाई हुई है। जो मुख्य सेव्य प्रतिमा है। यह प्रतिमा डुंगरपुर के पारेवा पथ्थरमें से घडी हुई और ६९ से.मी. जितनी उंची है। गर्भगृह को दिवालें सादी फिर भी उसकी पूर्व भिती में वैष्णव मदिर तथा दक्षिण में पार्वती की प्रतिमा जडी हुई है।

मंदिर के तीसरे मजले पर मंडप का पद्यमशिलायुकत उदित प्रकार का कलात्मक वितान है। जिसके रुपकंठ में १६ विद्याधरो की सुंदर पूतलीयाँ जमाई हुई है। मंदिर की शृंगारचोकीओं का वितान भी आठ कृष्ण-गोपीओ क शिल्पो से सुशोभित है। मंदिर के प्रवेशद्वार की रक्षा करते दो हाथी के पूर्ण कद के शिल्प तथा गर्भगृह और मंडप के भद्र आगे के हाथी के (पांच जोडी) शिल्प दर्शनार्थी का ध्यान खेंचता है। एस के अलावा मंदिर के स्तंभ तोरण मंडोवर आदि विभिन्न प्रकार की भौमितिक देव-देवीओं, किन्नरो, गंधर्वो आदि अलग अलग प्रकार के विपुल शिल्पो से सुशोभित है। यह शिल्प ज्यादातर अर्ध-मूर्त प्रकार के और रुढ पद्धति से घडा हुआ देखने को मिलता है।

यह मंदिर के देवताओं के महत्व के शिल्पो में यम, कुबेर, इशान, अग्नि, निऋत्य, इंद्र, वाय, वरुण आदि दिकपालो और विभिन्न मुद्रा में बेठे, खडे या नृत्य करते गणेश आदि के कलाम शिल्पो का समावेश होता है। शिव के विभिन्न स्वरुपवाले शिल्प भी यहाँ देखने मिलत है। जिसमें मंदिर के दक्षिण झरुखे में छ भुजाओवाला शिव का मंदिर सुंदर शिल्प है। उनके हाथ म माला दंड त्रिशूल, नाग खटवांग और कमंडल धारण किया है। पास में उनका वाहन नंदी भी है। मंडोवर पर विष्णु के दो शिल्प-एक नृत्यमृद्रा में और दूसरा गरुडारुढ लक्ष्मीनारायण स्वरुप कंडारने में आया है। मंडप की वेदिका पर विक्रम स्वरुप विष्णु की तथा तोरणो पर विष्णु का शिल्प कंडारने में आया है। देवीओ के शिल्पो में इद्राणी, स्वाहा, यमी तथा वैष्णवी देवी के अलग अलग स्वरुपो का समावेश होता है। उपर वह विविध नृत्य मुद्राओ में सुंदर अलंकारो से शोभित देवांगनाओ के शिल्प तथा धोती पहने हुए, दाढीवाले या दाढी बगेर के कर्मडलुं धारण करके साधुओ के शिल्प भी ध्यान खिंचते है। इस मंदिर अलग-अलग नरथर में रामायण भागवत तथा पराणो के प्रसंगो का समावेश कर लेती शिल्प पट्टिकाओं विशेष महत्व की है। जिसमें राम वनवास, वानर सेना साथे धनुष बाण से सज्ज राम, सात वृक्षो को एक ज बाण से वीधता राम, सुवर्ण मृग और मारीच वध, सीता हरण, रावण-जटायुं युद्ध, लंका पे राम की चडाइ, कुंभकर्ण की घोर निद्रामें से जागृति, लंका विजय के बाद राम-सीता मिलाप आदि रामायण के द्रश्य दिये है। भागवत के दृश्यो में नवजात शिशु बालकृष्ण के टोपले में लेकर वसुदेव के गोकुल गमन, गोकुल में कृष्ण-जन्मोत्सव, पूतना वध, कालीयमर्दन, यमलार्जुन वृक्षो का उद्धार, दाणलीला, वस्त्रहरण आदि कथानकोवाली शिल्पपट्टिकाओं का समावेश हुआ है। इस के अलावा दूसरे भी अनेक पौराणिक और सामाजिक प्रसंगो के शिल्प-पट्टिका में कंडारने में आया है। कलाकारो ने यह सभी शिल्पो में परंपरा का ठीक ठीक अनुकरण किया है। इसके द्वारा तत्कालीन वेशभूषा के बारे में जानकारी मिलती है।

इडर की रणमल चोकी के गवाक्ष में नृत्य गणेश का एक भाववाही शिल्प आया है। उनकी नृत्यमुद्रा में गतिशिलता लाने में कलाकार को सफलता मीलती है। हार कटिमेखला से बांधा हुआ कटिवस्त्र और पाघडी जैसा गोल मुकुट विशिष्ट है। गणेश के नीचे उनका मूषकवाहन लधु कद में कंडारेला है।

हडाद (ता.खेडब्रह्मा) में धोरी मार्ग पर अेक मकानघाट का मंदिर आया है। उसके मेदान में दिवाल के पास त्रिमुख ब्रह्माजी की इस समय की

प्रतिका पडी हुई है। उनकी मुखाकृति लंबगोल और कंइक विचित्र आकार का लगा है। उनके दाये हाथ में स्त्रुव और अक्षमाला, बाये हाथ में पुस्तक और कमंडल धारण किया है। जो घाट बगर का है। शरीर के अंग भी प्रमाणसर नहीं। दाढी मुघल ढब की कान तक लंबी दिखती है। जटामुकुंट भी सामान्य है। ब्रह्माजी की प्रतिमा कढंगी और चेतन बगेर की दिखाई देती है। दोनो तरफ ऐसी ही आकृतिओ वाले दो सेवको के तथा हंस के शिल्प है। इस काल में शिल्प-कला का कितना ह्रास हुआ और स्थानिक तत्वो की उन पर केशी असर पडीउसके नमूना रुप यह प्रतिमा गीनी जाय।

गोरोल (ता.इडर, जि.साबरकांठा) गाम में शामणाजी का मंदिर आया हुआ है। उसमें मरकत शिलामें से घडी हुई ९७ से.मी. उंची विष्णु का त्रिविक्रम स्वरुप की प्रतिमा स्थापी हुई है। उन्होंने चार हाथ में पदम गदा चक्र और शंख धारण किये है। पास में पाघडी पहने हुए दो सेवक खडे है। इस प्रतिमा के अंग उपांगो सहित हाथ की उंगलिया और पंजा में प्रमाणमाप का कोई ख्याल रखा नहीं। कान में कुंडल धातु की दीपकन्याओं के कान में देखने को मिलता है। मुकुंट भी उंचा नलाकार जैसा धारण किया है।

साबली-प्रतापगढ (जि.साबरकांठा) गाम में दिगंबर जैन मंदिर के सहस्त्रफण पार्श्वनाथ भगवान की काले आरस की सुंदर पदममनस्य प्रतिमा स्थापित की है। जीसकी पाटली पर संवत १६४८ (इ.स.१५९२) का लेख है उस पर छत्र धरता सहस्त्र फण वाला नाग के शिल्पकाम बहोत बारीक और मनोहर है। चोरस मुखाकृति, बडी आंखे कोनी के पास का खुणा, हथेली का कोतरकाम, बाल की शैली आदि इस समय को कला के लक्षण दर्शाते है।

कुंभारिया (आरासण) में प्राचीन जैन मंदिर समूह में सबसे बडा नेमिनाथ प्रसाद है। नेमिनाथ भगवान की प्राचीन मूर्ति (१२मी सदी) खंडित होने से ई.स.१६१८ में मुनि श्रीविनयदेव सूरिजीने नेमिनाथ की नई मूर्ति की पुनः प्रतिष्ठा कराई होने की उस पर लेख है। सफदर आरस की यह भव्य प्रतिमा है। नेमिनाथजी पदमासन अवस्था में बेठे है। इस के अलावा वहां के महावीर स्वामी तथा पार्श्वनथ के मंदिरो में भी मूलनायक की प्रतिमाओ की प्रतिष्ठा मुनिश्री विजयदेव सूरिने इस समय में कराई थी।

खेडब्रह्मा के ब्रह्माजी मंदिर के सभागृह में केटलीक धातु प्रतिमाएँ पडी है। जिसमें महर्षिमर्दिनी विष्णु तथा दीपलक्ष्मी के सुंदर शिल्पो का समावेश हुआ है। महर्षिमर्दिनीने दस हाथ में परंपरागत आयुध धारण किये है। देवी त्रिभंग अवस्था में असुर का वध करता दिखता है। विष्णु की प्रतिमा में चतुर्भूज देव समभंग स्थिति में खडे है। उनके दाये हाथ में गदा और पदम और बाये हाथ में शंख और चक्र धारण किये है। मस्तक पे सादा मुकुंट है। पीछे सादा तोरणकार परिकर है। दीपकन्या का देहलालित्य त्रिभंग मुद्रा में खील उठा है। दाया हाथ दीपक धारण करना हो उसी स्थिति में है और बाया हाथ कमर नीचे लटकता रखा है। यह तीनो की प्रतिमाएँ के सादे मुकुंट, कान के वलयकार कुंडल, दाढो पास से त्रिकोणाकार और अेकंदर चोरस आकार का चेहरा आदि देखने को मिलता है।जो इस समय की कला का लक्षण दर्शाता है।

❊ हिंदु-जैन काष्ठ-शिल्पो :

पाटण के वाडी पार्श्वनाथ के मंदिर की रचना के वक्त (ई.स.१५९४-९६) स्थापत्य के भागरुप विविध प्रकार के सुंदर शिल्पोसे सुशोभित घूमटवाले लकडे का एक कलात्मक मंडप खडा किया था। जो आज मेट्रोपोलिटन म्युजियम में सुरक्षित है। यह मंडप यह काल की काष्ठ शैली का उत्तम नमूना है। उसके घुमट में शोभते शिल्पो में उदित प्रकार की सुंदर कोतरणीवाली पदमाकार छत घूमट में फिरते सुर सुंदरीयों के आठ मल्ल शिल्प और वाहन युक्त अष्ट दिकपालो का शिल्प नजर पडता है। झरुखा का कलामय तोरण, उसके उतरंग पर पदमासनस्थ तीर्थकर दो सेविका और नीचे के भाग में गजलक्ष्मी तथा सुरसुंदरीओं और नृत्यांगनाओं, मंडप के गवाक्षो में देव-देवीओ के शिल्प आदिका समावेश होता है। मंडप का यह शिल्प गुजराती कला के जीवंत नमूना रुप है। प्रत्येक शिल्प जीवंत और गतिशील लगत है। यह शिल्पो का वस्त्रपरिधान, अलंकार मुकुंट का आकार, उनके उपर का रंगकाम आदि बाबत में गुजरात की परंपरागत कला की असर झांखी होती देखने को मिलता है।

पाटण के १७मी सदी के एक जैन मंदिर में से अलग-अलग प्रकार के वाजिंत्र बजाते सूर सुंदरीओ और गांधर्वो का सुंदर अदल-शिल्प अमदावाद के शांतिनाथ जैन मंदिर के व्यवस्थापकोने लिया है। यह शिल्पोका मुकुंट राजपूत-मुघल शैली के चित्रो में देखाता मुकुट जैसा है। उनके बडे चहेरे और फाडेली आँखे नोंधपात्र है। उनके हाथ के तत्कालीन लोक-वांजित्रो देखने को मिलता है। यह शिल्प खरेखर काष्ठ कला का उत्कृष्ठ नमूना है।

पाटण के कनाशा के पाडा में जोडा जोड आये हुए दो जैन मंदिर पैकी एक में एक बडा (१.१×२.१ मीटर) माप का कलात्मक काष्ठ पट्ट दिवाल में जड दिया है। गुजरात के इतने बडे काष्ठ-पट्ट जवल्ले ज देखने को मिलता है। जिसका निर्माणकाल १७-१८ सदी का जानने को मिलता है। उसमें उपर के भाग में समेत शिखर तीर्थ और नीचे अष्टपद तोर्थ का कोतरकाम हुआ है। समेतशिखर में तीनों दिशा में फिरते २० टेकरी तथा २० देवकुलिका मूर्तियाँ सहित कोतरेली हुई है। बीच में ऋषभदेव की प्रतिमा से अलंकृत तीन शिखरो से युक्त सुशोभित जलमंदिर का सुंदर और सुस्पष्ट कोतरकाम कोतरेली हुई है। उपरांत पहाड, पक्षी, नदी, सरोवर, वृक्ष वनराजीओ, तप करता मुनिओ, समेतशिखर चढता-उतरता यात्राणुओ आदि का तार्दश और रम्य आकृतिओ से खीचोखीच कंडारकाम करने को है। आत्र्यपद पर्वत भी चोबीस तीर्थकरो के फिरते शिखरबंधी देव-कृतिओं से

शोभता है। यह पर्वत आद्य तीर्थकर ऋषभदेव की निर्वाण भूमि होने से मंदिर के बदले स्तुप-रचना बताई है जो नोंधपात्र है। उपर के भाग में यह चामरधारी इंद्र बताया है। स्तूप की दाये बाजु तंतुवाद्य बजाता दशग्रीव रावण और बायी बाजु उसकी पत्नी मंदोदरीके भगवान के पास नृत्य करती बतायी है। नोचे सगरचक्र का पुत्रो तीर्थ रक्षणार्थ खाई खोद रहे है। आसपास का तप करते मुनिओ बताये है। यह तीर्थपट्ट काष्ठकला की बहुमूल्य कलाकृति है।

पाटण के कुंभारिया पाडा और धांधेर पाडा के जैन मंदर आदि १६मी सदी के उत्तरार्ध में बंधाये है।

❊ संदर्भसूचि :

१. थोमस परमार और जयकुमार शुक्ल, 'चंद्रक विजेता निबंध-१९८८', गुजरात इतिहास परिषद, अहमदाबाद,१९८९

२. आर.टी.सावलीया, 'गुजरात की शिल्पकला में कीचक', गुजरात का इतिहास परिषद का २१ मा अधिवेशन, कोटा (राजस्थान), २००१ 'श्रीमती सरयूवसंत गुप्ते रौप्य चंद्रक' विजेता शोधनिबंध (अप्रगट)

३. ब्रह्मक्षत्रिय मुकुंदभाइ, ''मारु गाम पाटण'', पाटण

४. परिख रसिकलाल और शास्त्री हरिप्रसाद ग्रं., ''गुजरात राजकीय और सांस्कृतिक इतिहास'', ग्रंथ-५, सल्तनतकाल, शेठश्री भो.जे.विद्याभवन, अहमदाबाद

५. परिख रसिकलाल और शास्त्री हरिप्रसाद ग्रं., ''गुजरात राजकीय और सांस्कृतिक इतिहास'', ग्रंथ-६, सल्तनतकाल, शेठश्री भो.जे.विद्याभवन, अहमदाबाद

७. शास्त्री हरिप्रसाद गं., ''गुजरात का प्रचीन इतिहास'', युनिवर्सिटी ग्रंथ निर्माण बोर्ड, अहमदाबाद

डा.मयंक टी. बारोट

आसी.प्रोफसर, श्री बी.डी.अेस. आर्टस, सायन्स एन्ड कोमर्स कोलेज, पाटण.

LBP PUBLICATION